पद १४२

(चाल-कोठवरी धीर धरूं)

वेद गुरु मज ब्रह्म म्हणती परि काय करूं उमजेना। विषय सुखेंद्रिय भोगा समजुनि, विषयभोग सुख नित्य मानुनि। निजानंद सुख गवसेना, निजानंदि मति ठसवेना।।धू.।। इंद्रिय चालक मानस वृत्ति, इंद्रियाधिपति मानसवृत्ति। आत्मदीपाविण प्रगटेना, उजळेना। विश्वप्रकाश (निजप्रकाश) आदि ज्योति (तेज) ममसत्तेविण घट तृण जल पर्णही हालेचना।।१।। (अपूर्ण)